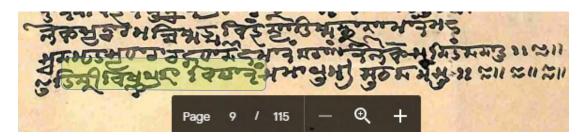
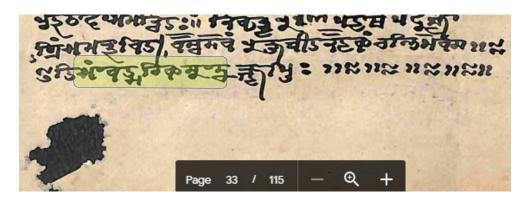
18_May_anantnag 1.pdf

<u>Title: Vishnu Puja Vidhi – Saamvasarika Shraaddha - Paksha Tantra Vidhi</u>

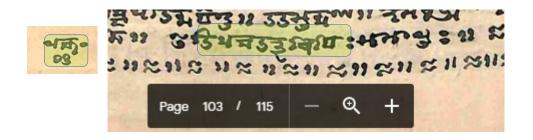
Shri Vishnu Puja Vidhanam



Saamvatsarika Shraaddha



Paksha Tantra Vidhi



यान्वात्रमभन्मभायम् मानाः क्रम्बल भाग्यास्थिता, यह वियान प्रवस्त हे अरोवड उद्भन्धन् उपात्रन्भवद्वयाः ॥ ब्रिंगण्ये भरोश्ति वर्षे । भिम्मिमे वर्षे

मकः भग्रान्त्रभः भग्निसम् । १०३३ भाष्ये व :माउडेमहाना सन्११ ठिड : न्सू भगिचस्मिनि मुण्डिक् इं मयभवदेव देव में सर्दिन देव स्ति। भिराम्भारा मार्ड भारती प्रवाह लाभी हाइस्थरम्भुन्सक्यं समन्यन्स्।। भाष्य अन्यान में त्राप्त के नियं ने में नियं म ग्रवण्डवग्जामः ॥ हिं भए वल में विष् न्तुभय कुडम् उड्डाचे पन्छ भभा । रत्यालास्त्रक्रिया के द्राप्तिक के अस्ति के स्त वस्लेभवारयालेक्भिनिसल्भाग भिव्यायालेड्ड भेड्यभी॥ यभिमिच यर्भचं यःभव भचा भूयः।

क्षे.

यम्भवभयान् उभाभवान्त्रन्भः ॥ स्विप्रस्व गर्मान्युर म्हार् हेर्ने प्रमानिक क लयुम्भुउग नुभःभन्त्रुमास्य स्भद्रम् त्र्यवन्तः, भड्रभूनिस्वाय स्थापर्मा मान्या भागान उड़्क्रभन्नक्भर्यभूम, भिर्मिस्य गाउद उस् श्रिमुन्भितिचयः द्वयः वयुन्धिभ्रमीर भन्म जन्मा रे शिक्षा दिन कार पर निर्मा भर्षे वर्गान्ड वर्गन्ड केर्य लाक्स लाभ रगाच्या याप्नवास्काभव यस्योगा ले रभाग इति हे विश्व के भारत १। यह विश्व में में प्राप्त भिर्दिसम्बद्धान्यान वणनायः राज्यस्थान वरायन्य प्रमुक्त म् मान्य मान्य भावता मान्य ।

मिन्द्रिया प्राप्त विश्व मध्य प्रमायक वण्णेया यश्या रास्त्रमन्ध्यवज्ञःमन्भूत्रार्भः उभेन्स्नभूमन्यदेर्येष्ट्रमित्रिष्ट्रमित्राद्रशा द्राह्म -विवासिक्स ११ नित्यासार भर नेश्वासिकः मान्याप भद्रवद्ववद्वः । विस् सेन् न्तुमाल्याल्यान् वृत् मिवण्ये रेड भर्भः भुभक्षा भेडार करमें वर्भे क्या क्रम माने मुवे अन्यन से नुभान्य दे भ

133

क्रणा मिमरमवस्ति। इतसक्षमदण्य मुन्य वन्त्रेष्य गाउउ गाउक ने जनानित कीडन्भवयभय डोन् विवसः भू हर् सरणभूभक्षिति वर्षा भाराभाष्ट्रकार दिल्ला अभागमा, क्या : अहा ल क्र ल भाग नार्ने । नियान गर्य का का का का का का का का का निया का निया का भवान्यसवयवन्यवस्त्रवन्यस्यान्यस्यान्यः ११ %११%॥%॥ मनः भूमन्ववाण्या व्यापा विद्वार्यके ।। अ म्युविस्ववेड भवी आयामेड क्या दि

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

डवन्द्रस्त स्मीअङ विष्ट्र में निभूक्तिका । ममण्डू बुडिमीअण्ठ भण्ड्री का हुने में खुडि ११ गहित्वा विकारी ए विन्द्रिक्ष्यणः उवने स्निक्षा अगद्वास्त्र ने अपूर्व न्याना निर्मा असवन्त्र असी निर्देश के मवस्ति मारा मिया वि मन में वर में कर में कर में यवामान राष्ट्रभाव गाँडाल भारत स्विति ११ सम्बर् किस्माय हर्या। द्यामभन् राप्याद्माड् विन्यमन् । भारत्यम् वर्गेड्ड्य महायू करिन्यम्भी। त्राभियाभिनीन्य व्यालानमन्ति। न्याय लड्ड इ ज्लामा व वार् विवसम्ब धारित्य दः भन्नक भारति नेपान कि के कि मारा प्रियम्बर्ध में भभवर्भः । ३३ भीनः भवत्। यम्यो नम्य क्ल महाउद्यास्त्र मारा र्भार्कित के नियम्बर्धिया भराष्ट्रमा नियम् निर्मा निर्मा आका निस्तित्स क्रमास्याः॥ अनुदानिद्वयादीनश्विणदीनस्याउठवारिक्यवः॥ यक्ष्म उज्जानमा यभ्यम् वर उपर द्रार ११ मुक्त नवर एक ग्रेसे ने वाएक ग्रेस मान्सी, विसरी वृद्धान्त्र भारति म्वाःभमा । । भट्टिक्टि न्मः ॥ १३॥१॥१॥ व्हारा के मान के क्रिद्रभवर्मि भाष्यिंभित्रं क्रिया विकार्य क्रिया विकार्य क्रिया विकार्य विकार्य विकार विकार विकार विकार विकार

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मर्काभाद्रमहिमारा अन्तर्वास्त्रमा अन्या अन्या अन्या

क्षिता केत्र हार है है। विकल्ला भारता गानित CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

गाइ अधुटन्ह्य भन्न भड़े किर्म्चनी मेडे नहुन वड़े । भुया करिए व्यामा भी भिड्न थे। क्ट्रा भड़नाग्येड विवरते व द्वा कु कर्ये क्टीडीड केरिस दस्य दूर करते मीरविमेत सम्बेशी। रवस्तियाने इडिशा उस्तिः अन्मवानाभाका इ रनेषु व अन्त वंगस् भी ये अनुक्य भी महत्व।। मक्ला महिन्द्रा भारत के प्राप्त करा मी विद्यापित के पीडि अरब्ल अरिव्हिंग भी उर्देन्सेन्य्यानेमुक्लिक्या न्मिन्सकता उच्यः भड्भड्वमभुद्रभा। म्विक्रिन्यभूष् अंड अउर विमार लिम क मुंड : यह दे भा गडिया रन्यभुडः क्लिकिन्ध दिस्सय सम् इः धारम मन ले थावड विडड भेगले सन्धानुस्वरिष्ट्र भुजाने, दुन्धिर्वा मुक्ति भागमा प्रभागमा कार्या भाग दिन्ता। निक्थ्वित्मित्रियारिक्रिएएम् रूप्यान्यन् गाना हामस्योभक्तिक्षामान्य हार्या उसीर्वनितः रिकर्भिक्त निभी मेश्य भूने भ द्रा द्रा द्रा द्रा

गण्वं महाइम्पेस् विश्व हृद्य भूम किल्ली स्वास्त्र में स्था हिंग ने हि

33



क विश्वासुन , यहन्यहर्म विश्वमा सन यहाभू उठः भूउ य्येड्ये विश्व स्थान्य स्थान व वर्षेड्य विश्व हुय भाग उवामा भाषा । भारता ।। वीग्नः भिड्नेम् भिष्ठुलयं निवार्येड नाणीया ना रात्राया भराव मार्मिया भराव भिड्मान्वरं भागलक्षेत्रा भूषा गार्वभर्भः भ्रमा ग्रमः सीमः ॥ वस्तिव्य हल्भल पंत्रन्य रा भारत्वित्रधाराभेड् भारत रिल्नमम् भित्रे म १ मक्यंडभण्यभन्यिक्तंत्रभूगाः। रणविन्भभन भू क्तीवयः भप्रथः दिल्डेस्कृषः (उसक्ड्यल्भे भूकः हिमेरी गराउरा।

भर्तेनण्यथा वस्तुयन्भः गूरियाय-वद्यक्रेनम्म देभनुष्य मिम्प्य धन्दु हुनुभः , नुष्यस्त न याभिष्ठि उत्तव इडीन गडेमार्ड भप्नाभयः की लग्ले भारत्ये इसियान्ये राम्हास्य गाम्बन अम्मयंस्थान भागका स्टिन्स द्वाला ई अक्ता भागका स्वह भाग मान्यां उभाग वहां भागायां मुन्या भागायां भागाय विकास नापा उपके उभाग उभ मु उद्देश में अपनि १ उडि में वर्षि मामा भारत प्राप्त निर्मा प्रमुख्य निर्मा प्रमुख्य प्रमुख् भं ः वहार्यामन्त्रा । प्रदेशकार्यन्त्र । प्रदेशकार्यन्ति । प्रदेशकार्यने । प्रदेशकार्यमे । प्रदेशकार्यने । प्रदेशकार्यने । प्रदेशकार्यने । प्रदेशकार्यमे । प्रदेशकार्यमे । प्रदेशकार्यमे । प्रदेशकार्यमे । प्रदेशकार् क्रीन्वम्यगभन्भः। दुष्टिक्भुन्ध्यनेवक्रम् मनिवहने के इंशिक्ष अने कर मन्।। CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

व्या काम यह वर्य कर कर कर था भारत पर वर्ग कर कर भागारिक वर्ष्क वर्ग वेवहंगा मुभमा व भवम बसुपंक य भारिलंकिता भाषा :,वर्षिण भाष्यम् ने भाम द्रम इयंश्विष्णभी ११ यम विमस्भवभाकीय, क्रिक्कि डे हुः मेनजार्थ रहिरेट्डिं! रहितः भाः सिमार् भिम् : भड् ११ म्यामियम् म्यामियम् वर्मान्यम् इन् भभे क्रिकेन्द्र शाहर भुष्य व भक्षि भारीमा न्थमडभाउ यमान्थमा भिडा, प्रसिद्ध यमका है क्रिकेंग्ड्राधुः भूषाचभः ११ भट्टनः मुसंस्थामुर्य व्यवस्थात्र हरणाववित्रितः राज्यान अस्मा भाव विक्व वर्षम् कृश्यां वर्षम् वर्षा प्रश्ना वर्षा वर्षा

इन्सम् । इ.भुन्तुत्रभियद्वा ११न्यम् वन १४६०माच्यः नुमार्भायभागाः भद्धतः सिमुक्रमचक्र नुमार्भन्।।। नुभस्त्र न्।। यस्यभंडत भ्रमिता न्व भूडेंड ११ यम्बन्भः मङ्गिनः मुणम्यूयम् सुभिम् इन्ड्अभ् मडा रस्यान्दर भावड्ण्डर्न्य उन्धान् उम्बर्भक यज्भी उन्धेरन्धार्यभेमज्ञान ११ महिलाय कार्य कि महिला मिर्ट में कि महिला के महिला के कार्य के महिला के महिल क्रमान्युले में मान्ये हे ध्रिकां द्वाभा किएम क्रिक्ष प्रमान के राम का के अपने के अपने के अपने कि के के कि कि के अपने कि हैं उम चंड भेगवमें कुमें न सुरेडिण हुनीभ क्रमें डड़ रहे रहे रहे लिश्लेक्वडो। मिर्म्साध्य में उद्देश में इभरतिव उभिति के भा

मन्भण्य थडः धुस्य अम् अम्भयण्य मुस् इ. श्रुडिवडः १५५वे चेमठवेड्ड, चेम् भ र्धरण र्धन्ठवनः भिज्ञभद्र योग्ठवरत्यम ड: १भ्डाभ्डं या मुठवडार छ । इ. ध

भि3:14242में मियाभेट्स खि3:भार्<u>की भूर</u> भूर म्बिभ्यत्रिताः अम्भवनम् मेन्यान्त्रितः ११ मेन्द्रने म्य चेरेठवच्चा वसः भाउतित्या मुझ्य वर्गा वर्ग भयु ५० यमन मुस्य न्यु मन्त्र व ५ ६ व मारे मामुल अर्ण्ड राया मियं अइ, अडि बिर्मः भेरडक्र्युः ११ संद्रम्बी श्रम्बर्म वर्डे महिल्लाय विश्वम् वः नंत्रम नहत्त्व प प्रविश्वाभाष्ट्र वः श्रक र्भ भर ग्रेम्भ ग्रंबव ३ भरे व

37.45

नेयन्युरव्या मुग्रिः पडाष्ट्र : नुस्थानुः भिव्रभ मयमुद्रभुण्यण्ड भिष्ठिहा व्ययन : ११ नुम नुभाकारात्मिति गार्थं विभिक्तः। नुभाकाराम्भून वराण्याभारमाक्त्रकारी विष्युर्ग, नुमूलका भ उउभाउउमामिनिया उद्देश्या । भद्भागय । है। इन्नाः ३ ज्यभञ्चन ध्वाडणः ३ म्डडण्यडं १५३: र्गिरेश देन में भारति हैं से कि स्थान हैं कि कि स्थित इ सिभेक्षे वसुम्बास्क अपने मुख्ये मुक्त नियाने विश्व भागा कूम भी राजा भी राजा है। हुने हुने मु उच्योशा भद्धना नग्योभिमा नग्राम भुके: = ग-मुज्यश्रु र भः र गविश्रम् ३ नयाभा णस्माद्यन्ति थेक्षुक्ष्माद्या चुयुक्रेण्य

वस्मार्थन्द्रभाभा श्रियञ्चरः। उस्कार प्राप्त हे सम्बन्ध स्थान मिर्मित्रमा उपार्मा भीतः भीत्राया ।

が更

न्माम् विक्रिक्टिक क्यावस्थानीकामा इस्लिक्षिक ११ -प्रभावति । रिन्द्रेसके उद्गा भिड्मिडमड्य भूभिडम्य प्रमान्य प्रमान्यद्वारिक् मुक्त थ गर्वभाइ थिए। महि अधिवनमहि भेरह वर् रिलमक् भूषा , उमक्रम् लेशा था था थे। द्वावाण्याभाग्रमा भारति , याकामा गिन मुक्तिकार्थे वडराभरा राममरी द्वार राम्भाइम् इत्रेसमा सक्ताम इड्डियनमें भागेलंड ने विक नुद्धाः थे।। इडालीक्सलद्भान्त्वमन् किंभी गर्डेयाः भनिहाः भविका में एक मर्थाः भाउना इत्राच्या नव स्तर्म इद्रा मिक्रमल्यु मुक्षमन भाइम्रीलीलया क्राम्प्री विभूमबन मनकरी मद्राच्यान्त्रम् वीवारदी आव के व भी के भी हिन्दी मवस्त्रमण माने में ने रावाभिक्तिभाद्य का उभागार : एकिन्वमर भड

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

भयक्रवाम्डभडः भिराश्माम्य अवःभवस्य मान्यस्ति निमया भूगत्रम्।॥ ध्यमिनितकः कृष्टिया रूक्त्र के स्थार क्ष्या भवत वक्षः भव

वित्रमान्य द्वाराष्ट्रमान्य वित्र वि मुग्यनान यवं मा यभामा उसः ग मुरियभः यम् गर मिड्यु अस् प्र भन्न , योवनुकावितिक उच्चमेड मुत्राचन व न्नुड्रेष्ट्रेः प्रयक्षतिम्हिभभाग

भाकक्का :, उभाविक्स यण्य क्रवित्रं भाविष नुभगत्रा-नुयुः प्रण्यन विक्य श्रीन भारतभाषा विसा न्यम् वडमरङ्गाण्येकः भड्याः ॥५६१३ भिक्षेत्रमित्यात्रिता कत्रात्त्रमित्यते मेर्वद्रीय दस्य अवत्त्राम् रेशे भनित्र अवार्य अवार्य स्था य उउ: अच्चेड्र लमध्य स्थाउ वड भद्रणालचा विद्याम ।।

नुष्या वर्षा दरक्रमीनं वड्न अनुसूनवे मुनःक्ये नियुः ग्राडमड मिमार । एडि : मान्दर्भ उसमी न र दिये ! वसे अ भागान्त्रभे सुव्भक्षा १० उद्भ १ उद्घ यक्तक्वम गिनुसून मीनुइन्स क्कूल मग्रियक्षिकु इंग्लिक्स स्ट्राभ उद्योगमान्यामा इमेर्नियम् क्मलाभाइकारि में कुर्क्ष्यमंद्रभागं नमा भिभाउँ भिर्म मिन्द्र है। कार्यक ने मार्थित । निर्मा निर भिउर्वन्भय न्डमा उपन्दर । इन्नि भद्यका रामकारम् भक्तानमयूर् द्वानमयूर्य उद्भन्न भर्मभन्ति विमुख्यभूभाम वर्षनाभने। बर्षन्ति। भूरानुभा। बसरावन्दन् रमाभिक नेक भन्न व । तिक्कि कि के में मकि सिर य नुभः भाषा नुभाष्यं पिष्टः, नुभेन्य नुभेन्य गम्भ ११ विकलुमभूभ निया वर्ष नेवामयाडेशाँ गिरिष्ठिश्र इस

: अर्मे में भेर : नारे शाहित है। भट्ट में तर , यर्डा भड़े १५ मुख यमकु उन्ने रूप्या थनु उन्माय, उरसुर्भाषण्या, निप्रार्थ

भण्डा न्यथनः भुनवश्यः सर्भारः भगमा, सुब्धार गणमन्द्राक्रवणभड् नरमभन्भभन पारः अनुरुष्य भनः अनः इति

C-0 In Public Domain Digitized b

· 作

मर्रिः भनिष्य उत्तर्भन्त ।। यदुमण्क भन्तर न क्तिमाउण्याभयकामा उद्गमार्ड भिर्डेड विभारमाउभ इंग उउ मीयावसल्यें , क्राम्थुअसमीय इम्यु ब्रह्मलेखन उत्प्रात्मान प्रमानह दण्ड ४ १३ ११ उउत्ता अनुन्त्र ।। उसमाध्य भूगेन ।। नारम् मानना । भइरुद्धामानु इशे निका भूषा भूडम भद्रमा माभागा विडा, वस्त्रमच अज्ञाचीड नहक् विन्डमच्या ११ % दिश्मिक्सिक्स्य क्या । गहाह गहाह



Par भड़ में भू ० मह CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

वश्चमवण्मयभुभेवश्व ··· भूडः। ठवाटा मुप्स मान्य रेडे कु सुरिष्ठितिः । विरायका भिराभानिय लम्भूमदुस्म, इंहीभः भभुनुभानिमा स्युद्धान्दुः भा मका नुमक्मामीनिन्यु हार्यकाय : मुध्यायेडी भारतमा प्रता भीतिक मिर्गित में मिर्गिता यान्स्भाः अंभागताम्तिम्तिनभागतिम् किन्मची डिकल्डमा सन्वयपु विश्व उ वड ११ भूमाना िन, उन्दिष्टः वन्युमक्यन्भः ॥ यहद्रेज्यः हवाय क्वण्यनार जन्य । वित्रण्यक् युना विदेश दे इरिम् अद्या ।। कड़ बाम नम्ये ।। भारू यडनी राष्ट्रियः। त्रिश्च थाउनः इत् १५ कः क्रियाउन्य ।। न्वर्षः । दर्शाहः इ समज्युः ॥दि क्लमन्त्रन्था।

न्त्रमाभनमुग्नः। अभुमी जुसनम्परभ इसे भेरुभाषुपाभः भडलकराः। जिल्लाचार्यात्राचित्रयोगः ग धून्ध्युप्ययं दूभः भारतामा भडल्खक्मन्भेग्रामा लेक मावडीव भवन्ह मु गर्म मुभम मु उक्र उपकुड भूत्रम्य विद्वारायम्बद्धारम् निर्मात्रम्य । र्भाष्या ग्यमक्तिपति ज्वा । उद्रोमज्या ॥ म भन्भी भे भनितृता गेंड डु: थण्ययः , गेंड जूनः हमय , गेंड शुः मिर ल्कः निम्मुक्त्रमः ेर्ण्यः भड्माक्नाः ग्डमद्रः सन्गमक्कंन्भः महारानः कृति मुख्यन्भः। महामाः भड्क्र लक्र किंदिना मिना है कि देश है ।। किंदिन कर किंदि । CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

लियाः गृह्या मित्रा महरूपा महिला महिला महिला महिला है। चिमडेमिनमाः छिड्ः श्रीबङ्ग नेत्र काल्या नमः। छिड् स्याप्त ने दिस्त मिन्स्स हुः छि। भराष्ट्र निष्याय विषया विषया गिर्म : वंश्वराष्ट्र विक्वमायहम्। गर्धामानः भम्भवाद्भव न्इक् ब्रायद्या रहेड्यः भड्याम सिव्युत्त्र नम्यहत्त्व॥ किड्यावंडग्यु श्रुष्टः वर्ष्टे उत्स्वी , वनस्व मुभ छनः चीभाद्भाराभाष्ययेयाः कृतिश्वार्यमम्ययुग्ड ल्काधार्थः॥ १७५५मयोः। भागात्वा देश वर्षा कर् ठले नकी, मेंव शुरुषये, णीभाइ कृष्ट , रणयेनण भूका मायां यः नीमितः लन्तरा प्रमेमय दिसा। १६९ विकु: क्रमा वर्षे भाग हते मनश्र मिग्या धीभाद करना

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

भिउ-। भि वीवगन् १मायः। उद्यास्यियिथ्य विस्वत्यस्य द्वारा कवन रक्तान्मः भाभद्रामक नम्प्रहर्मी। विमेदहारमथर सन्त्वा कुरिक ले नुसुरोहा द्वक्षा मन्त्र वेभये। मुड्डे कार । उन्ने वका

भन्तिभन्। -प्रद्वा । भनिमाय यभी। उड्न ग्राभः॥ वियम ह नुयाहरू। ये प्रथा या गर्भा ध मिरायेनन्यिति मिग्यार्येन विमान्त्रन विवस्कृत्। उभाग्य न्रः। नभाग्यस्य मुना ११ क्षिण्यन्त्राणा भरिद्वाभन् हम्। क्षिक्व ने मिरा शिम स्वभुगे मिरमा श्रिम् म्त्राण्याच्या भार युत्तुरा गलभाउँ मार्ड्यः। इक्स् क्वे र यः। क्वान करणारम्भम्बर हिन्द्र करण शहा के दिला के कार कर कर कर कर कर हमया इक छात्रः भागां मक्षेत्रा महा मिरि

वस्मानुनुगरा भुववन्भक्तयः।भागनुग

प्रमुख्या । स्ट

भण्मयः ११ १० एउ एउ क्मम भुत्रव्भ में हमयाया भेममार द्विया : मिरमेश दिसह दिन क्रिम्। भनः भन्मारि क्वमः। मुनाणा १वम् व्यव उइः। भारत्य विष्ट्रिः सुरुप दर्ग एडिड भवियाय भूय • वसे अविड्रम्स • अग्राहुन • भूपे क्रमा वन्मारिक नेमार्यक यह भिन्न कर् रडा। भद्रमाल्या जनग्या किंहः।। रेवेड्स क्षेत्रवार्यभ्यवया भएराण्य ३ र इस क्रिक्स म् भराय र अत्रथाय व मुं सुराय १

ठणवडठवण्यस्वण्य० मचण्यस-९म्यूण्यस-३ थ्युभ उसर- द प्रायम न भन्म विमार्ग विमार्ग यम्पु । भारता भारता था भारता ११ १६०० वड विक्यक्य ०१०कम् उत्य १ न्यं के प्राप्त त्राय मल्यामाराय ५ कलमानुष्य । जुन्याप्र नुम्याय यह स्थाप्त मारा १ स्थाप मा नगभक्य०० विक्ष्यनग्य ७ मुस्कृत्य

यति है यति है म्ब्रन्तुण्ड गवर ०० वानुष्ठ गवर ०९ १वउसुण्ड गवड्ड ० मिक्न निकार्ड भाइराचा प्रमान करान न्यु भव्यवर्क उच्डा चमः । । इहः भमस्य पुराष रम्बःभाष्ट्रभाष्ट्रस्य •४

भ्रम्भेष्ट्या ग पर्क विद्या भ्रम्भेष्ट्री हर् मिरुक्ताम्माचिक द्रा द्रा द्रा भागका भागका मद्मक्दः रुष्डुः अन्धभावा इस्नामस्मः 'गड्वः भ मनावभलनम् म्याप्यः १६ मुन्यमः १६ द्वार मुण्यमः ११३॥ धना निवहमन्त्र १७ क्रुक्ताः शुद्भावाः ३ १७ नेम मुन्द्रण्यः ३ १७ वर्ष मलिलाम माल मिन्या वकाड नाग्य ए या भी भाइ उत्रावधाः न निनमं भनिकन्ते प्रमण्ड 3 रिक्टिश्य ने क्ये निक्य न्य से श्वेष्ट्रक बना उभस् सुड बोक्न भरप्रध अवार । इंवेडभः क्रिंग्या व अवर्य ग्राह्म द्वाराम। एक किरा देने कार्य कार्य अभ्या के विष्या करें यावक्ष विष्ठा विष्ठा विष्ठ देवे विष्ठ ने के प्राप्त के के किंदिशास्त्र तिक निक्रे किंदि हे हैं। विशेष्ट है। राउड्डार्यय थि भद्रम्य यथी उन्नम् भूमम 3

निक्ष भारतभा भारत्या । उस्मा उस्मा रहान

इः। भराम्भ हमाक्षम् ०० ए अस्टिम्सन मेन्सियम् व्यापन भमन्भु ०९ ११ वर्डभात्मुस्म माउ भग्नका स्टिहरामणा कराय खक्तर्यक्ष मेमताः के अन्यः मन्यस्तः महिता किट्टाः उपम्यः, भाचाः, यिन्टाः। स्रीमणी

30

किर्वत्तर दिन्ता भद्भवन्ति । में महत्वा वर्षः ११ भद्भाव उत्तर वर्ष क्षिक्ष्याल्याः ज्ञार्यस्थाने गर्ठक्ष्मीन वद्यक्रमीने ॥ खुरूने विष्युप्ति । वसू मरणने क्न ० भाष्ट्रयहन० मधुरणने अञ्चले क्रिके ही जिन्द्रभाष्ट्र मभूरान् भज्ञान् कृतिम् ये जुन्मु ११ अस्विक्षित्रः अन्धार्यमं मूत्रंम् निर्भन्भ अम्भारक्रमंभनं म्युष्टि वड्मरः म्यूष्या ठणवंडचभुमं वस्-द्रामभाद्राच्यडनम्बङकाभम भाभनंत्रभः गाभद्गाल्या अविद्वास्ति - देवक्यीन वद्भकः असमाभनंतमः ११ अधिरापडयनगर विश्व वर्षक्रवास्त्र वर्षास्त्र भाक्षाया वर्षे वर्षे विश्व भावत्र अस्त्र स्ट्रिक्ट देशक्र क्षेत्र वर्षे अस्त्र वर्षे

19. g

यन्त्रकुण्यगुरुभगः भू विमह्माल्यम् पर विये : श्रेष्ट्रभाभ विये रिक्ट्रभाभ विये :मपुन अग्रें श्वा चूर्वाम विध्वमिश्व विध्वनि गर् भेडित शुवडची दल भो गेरेन की भे: अमेरे मारे भू :, यं भुरु भुरें भावद्रभल्भे विक्रियनि इवेन निवसु ॥ गुपि निरम्भाष्ट्रावडंवासुम्बर्ड हण्डवंडवंमव्ड ठणवर्डेश्वन्यके. ०० ठणवर्डेहीहीभः अदं १ ठण वडी अभेर कुलेर सच्च हुरी एक एरिकी उन्ने धन्त डी यनां मीमणीक हणवंडी इस्म भड्युन ११भ सुम्सी हर्नी थाक् यंडन्मचड : 11 भड़ गणभाउँ । उर्गमा इंत्रकासीन वमक भीनी

रण्डाम बडा चुक्डिया भारति चुक्डिय न्यभग्नु वस्य मन्त्र न्य

निः

वानिवर्षभक्तकम्पूर्मक्रिकम्प्रिकारक्रकार्श्वम्य इन्द्रिक्षः। स्त्रीनक्षिक्षक्रिकारम्पादक्रिक्ष्यम्य वीष्ट्रिक्षक्रिकार्थे न्य क्रिक्षक्रिक्ष्यम् भिन्तु उत्तरभाम् । उत्तर्भित भामन दिस्य भार लक्षीयड इवन्भाग्रभारम्ब स माण्याड लाक्नाव हवर्गम् इस् जन्डराग्मभाभाभाकि मुभायाभेक्ष्मित्रभाक्षित्रभाक्षित्रभाग्ने मुग्ने विभान विद्रार्ति कि मी कि भने भने भे विमुक्तिस्य द्वारा चडमीर्यम् मंड्रिकं भीड्वभासम् मुडभी यन्त्र भिष्मिक भारती कार्या के कराती के कार्य के कार कार्य के क हिन्द्रभूतं भन्द्रभंतरम् भेक्ष्यम् वेयाहिन्य राध्या भारतमिनं भाषां वाद्र मार्थ * 4 4 5 6 Mn Public Domain. Digitized by eGangotri

धिनिकावसन्य भाष्ट्र उद्यमा भीडवत्र भन्द भीडमायुम्बङ्गामडभाग वर्षा सुने सहस्व म रिक्टिडिश्म ११ मडिसि सुवडे ११ मिनिसि ॥ विरुद्ध भिराष्ट्र विश्व कि सामित्र के कि कि भद्रम्य न्ययाथनमञ्च ० चुन्तेष्ड भू व छुन् कि इवाधिक के निष्य ठिनिमययण्यालाभाइभक्ष वनण्यननाग्रहभागा

3

भिन्भाष्ट्रमा च्चाइया भिर्माएड भाग्य णड्णकान्यव्याम्। इत्रः ॥ ग्राम्भावभीवर्द्धान्त्रीम्बन्द्रकृत्वर्ण्या भवभारतामा सम्बद्धमा दर्गमाका

HA

3.

वनगनमङ्ग्रमाम्य अक्षेत्रभग्द्रस्कारमण्यः द्रथा महिला भ इस कुन्द्रमा महिनक्षा भी है इस्लिन् यणभामगुन्य महन्द्रमामाभाग रिश्वास्य वर्गम्य नाववर्गः भी वस्त्र न १मान्यस्य भारतः। मच्यू वस्राने नास्य थावेन

भण्ये अनुदृक्ति प्राच्यामें क्रिया भारत्य भारत नभः मंद्रमची निरुष्यु काव्यु अपूर्व । भारत नस्रिक्श्वन्तराधिकाः गण्यन्त्रम्भद्रम् हिन्त्याचाराः सम्भाष्यतः सम्भाष्यः मिन्नुभः= धरुयडयनगण्य छय। हणवडवण्युमवण्य र ह ग्वड छन् बस्वाया । इ हारवडाबन्यक्या । ० इ क्लवडइंडीमः अदया क्लब्डिनमचे. ०५ भद्र उन्य द्रध्रम् इव्यन्त ॥भग्न या नेनव्यक भर्गणभाग देशका देशका एक । यह । यह । यह । भः भण्डम् "मं र्नुवण्ग्यह्॥ ॥भूनः महर्मे सुभः ठगवर्ड ३ दिभञ्च तुर्भ

हिमक्र हिम्ह विभाग्निय । द्वार दे कर वा । हरा वन्युमव • इ ठणवर्षमव • इ ठणव क्णवहाँकी भः भद् । र क्णवरिन्त्र क्ली मण्य ि, एक्स जिना उन्न भावित योगी मीमा रिक्टणवरि-उडामिभद्युनिध-उध्माषिक वर्णने भाक्षाचाउनमवङः अमेनेतान्मः। भाक्षा प्रभार के भारक प्रमान करकार यह । वर वर वर १३ ॥ जुम ४ हम्मभनीय ॥ उन्ध्रान् यहरुधल उसमाम् ४ १५ भनु

नुः

यद्भिम्भाजीवभः ० ८मभागः भवद्र ५० धर् ठणंबड्यान्यान्य । एड कि भाक्याय । राउ पर्वे अवक्र अध्यम्भम्य विभि य मुबन्यभागहत्त्रा ० भयः भी सर्भय रजभयी भू भये क

9

म्यूमिकः ।

डि अग्भः अग्भभाति, गवा उ मंच मुक्मः क्रमान्ययः । च इमार्ड भ्रभुड ०५ महुरि व्यक्तिक्तिः

धार्यक्षय राग्याण्य का वडवान्यु म्ब्राच-८ द्यान भारत्याउन्मन्द्र १एक्विमार्ड्सप्नेभारिक्तास्मा न्सः ११० डउः धरुम भुन्नान्।। भवे भण्या अडः भेक्न कि में अपना 1.020142 doth नुभाग प्राथ्ने भरेत इममीडाक का।।

र्युरं भभाष्ट्राभी स्वयंग्यभभूप्य मेरमभी ०० व्यक्ति ०० वस्मेरेत.०३ यः इतिनीः ०८ अधावतीः ०५ या रामण्यः ८ वर कः भाजाः। वर्षात्रः

किं

याज्यायः श वाड्याभा ५, भ्रम्बरी ७ यःह नित्री. ०० उस्तिहाँ ०० उस्पुर नुषक् मुन्नु । ०। यह नुप्रे विष्रे । यमवण्यः भर्द्रमम्भावान्त्रव्सः १११ स्वाला

गलयर्र देशियम, ज्यु भल्लेमपी क्र केट य मक्कि थे ज्या

भन्धिक वर्षाति नर्षाति । भारतामि भ बुउन्दर्भ धमत्भु देखेयपर्भु वन्पुड्येसु बुड गुल्मा विकास मिला स्राप्त कार्य के भग्ने राष्ट्रकार्थे भगानि विकार की राष्ट्र पण्यासु विस्पाप्यासु अप्याम्यास्य सु अस्ति वासु भचरड्से अन्या ग्रामस्या वस्राप्त स्था मूं मडक्षं विभड्मं काल्यं भवराण्ड्रम् रक्षित्रमें अपिने राममें नाममिरं निर्म ब दी. श्रीभरी स्मरे शेने में भाम देने में विश्वति. भूडणियित सु भू के भी य दे विस्विध्या भी

MESERA

एक्क्न्यूर्में उउद्योधारम्लं क्ल्याबीडी न्डिया हाम वव वर्षे अनुकृष् म्याक्षेत्रेत्रमा भूषे १ भवरात्रम् १ भवरात्रम् १ मन्या क्रम्यः वद्भाव भिल्तमु अस्तिम् अस्तिम् अस्तिम् भू अस्ति। द्वा किम् ७३ सिर्द में १३ सिर्न में १३ भन्न से १०३ भन्न ९ सं- ३ द्रार्थ- ३ म्पड में - ३ र बर्न ने - ३ राम्स्टें राम्डली ११ उड : स्मिरिन्स्डी १4इ उद्यालकेत्यी, व्हिष्मक्ष्य द्रवण्मह- क्ष्य वण्यन्तः म्राज्यम् भुडाद्व अग्रह्मा भेगः म्राज्यभ्यः अ यमःभूगाने ३ मदमः धे र ३॥ मध्यमुक्रभे इध्वें ३ विद्यमाः भु र ३ दिवम् व १ थे र ३ मक्ष्यः अन्द्रः अभाभः सन्द्रः अस्य ः अन्द्रः अ

व्यवः सं-रं-३ रसः स-रं-३ स्थार्टः स्वाप्टः स्वाप्न देश मद्भिष्ठिश्चभी १५उ० ४ ११ विशेष उल्भवन । द्वान दिन विभाः भिरंदरः भिर्माः भिरंद के विभाग्ने विभाग्ने विभाग ववङ्गायडग्ड्यथः ११ महिल्मने : भिड्ने न्त्या मुख्या लेह्नन् : भः। उथान्यस्थाना वार्तायानुभागतम् भागत मस्य ॥ उयह नः । भड्डः भस्य भः गर्या । मव्डक्टः ।भड्डम् । चेड । १भेड अक् एड : भूषण्डम वड्डीग्राउँभाउँभाष्यः कीन्त्र

भारतिक से शास्त्र राजा ११ राजिय विक स्विक स्विक स्विक भः १५७ भद्दः थ- भर्भडा भद्दः सु । श रा रा रा रा यम उद्यम्मध्यम् यो क्रिमान्भा व्या या उत्तर उवारः स्वापिटद ग्रां भन्ड म्हर्म ११ राष्ट्र भारत केग्रहःस्यान्त्रभस्तिर्डे ३१ न्ययालस्यम् भम्बण्डपंडण्यङ भम्मा ग्रिका स्वाभाव । भन्ने धर्मी:11 भप्रताने ने देश भारती के विकास भन्द्रिंस्तः भाउ ११ भन्भान्वेवन्द्रियम्भ न् अअहः। भाष्मीनावेठवहुनः ११ भूरभूरभदः नुस्कण्डः भूषान्भभू भुष्ठे ३ ११ र्वित्रभेवः १५ उन्सर्वे सभवः १भडंगः मुगाय सभेवः १भडं

रिवच नेभवः १५डिने उभाष देभेवः १५डिने वन्य उभेवः १५३३: क्राच्या नमेवः १५५३ : भूगाचः भाउत्याम्भावतः स्यायङ्ख्यं भूभा सम्भाज्य ययं यमण्ण भण्यस्य यद्ग्यं उत्र इत्यं भः भाग्मान्धु उस्वयं क्ष्मा व उद्यन्भा ११ भाग्यु भक् लेड भूणनमभू एउँ अग्रामंडी । भूग्रिमंडी ॥ भग्निहः समाज्यहः श्वास्माज्यहः ११ भाजम यी प्रधानमञ्जी कार्य प्रधान भर्ता। भर्वः । भर् ब्राडी। इडिं इड्राइी। भडनः। भडनने। न्याम हरा भारमल भरकामहमा अध्य भन्नारः 十里里。日本

गुरु सुसुर र कुरु य ज्ञल ध्रमभुकुषः । य भेड्ड क्वभूभवः यमच्याम्बरिकाः। राल्लुम् देव दुभविन्त्र व देश्व भड़भाभी॥ भनुभण्डणभङ्ग हे का कम स्वार्ड श्री ह डिग्डममन्त्रमुक्त करिवमन्त्रमुक्त भूष्टमन्त्रमु गिरात क्या । उसकडमान्स्य । दिसं व गाउँ ३ १। महन्य उपन्भः ग्रीयायन रम्छ माम द्वारा क्र भिगरा थर् इक्रिना : ११ दव भुग भुम यही नगण्यक्रविक्रकः भमनागुड्कि भिक्षः जिस्मा भुग्य अवन्य ।। क्रिश्च भ्या श्री। क्राल्य निल्या वाष्ट्रामा वाष् भक्तरुन्युन्रीयलः ॥ मुध्यत्रहन । नर्कियुंग

।वनुयुक्त निर्मा कि । इसे निर्मा भारत यडभानिनंभया ग्रांच्या व व व व व व व व व व व व व निन्द्रन्थः इर्भिभगमल्यः उराम् भा ३ म्हर उण्यलकण्डायमयमसङ्ग्रह्नाः स्मित्र क्रियान्य निर्वात करात्र करा करात्र करा विषय ग्उन्स्य,उधाराहारा इवरवर्ष भेगवुः १५ वाका मा स्वाप्ट भगाव के स्वी तिया उठः भव्यः भिद्रहरूम मे सुर्य न्त्रम्क मा भवन विश्वभी ०६५ भी ० इर्डिड म्बन्सम्मा युग्गत्तने विक्रित्यमनं वृद्धालं भाष्ट्रियो । महान

एड्यु उस्पर्य (Buks रामा मा वड । वन मानिक दल्या। १एन्सम्बद्धः ११ क्रि डाम्भ्रीगाडभवावकः। उपमिन्यन हिगरस्य कर्ति कर्ति व क्षेत्र व क्षेत्र कर्ति गडरम्य उक्त भव्य कु भावक न्याया भिन्भः ११ ॥

उत्वन्त्र अप्रिक्रम्म स्वन्मां उत्वन्त्र है गान्यम् याम । भाग भाग भाग भाग भाग । ११ स्टणवानि भित्रस्काना भड़ित्रस् उसक्मद्रन्मद्रम् हत्त्रभीतत्त्रभी भाषात्रमत्त्रपुर्भ हे द्वारण भाक्ति॥ दिस्तीदिल्योभिर्डभान्ति विक्रभान र्भक्रिक गर्नियम सान्यमा

उराम्यान्य कं सु निमरण्यगाउरापाना । उप्तिस् १५०० पर्या करावडवा भूम क्रमान निम्म वया भद्रभ्रम्भि वस्ति निम्मिश्वर्षिक वर्षे व कि हाग्रमान्य प्रमणा थेंग्य द्वाभन्भः ११ मुभादश्वाय ।।। ने भर्म ने विभवण्यवभः भक्तिभनः गक्तकभनः राधकभनः दिस्मुड 11 मुर्येक्ष्म • चञ्चभनः भिद्यनः महत्त्वधान्म • भड़म्मलथक्षभनग्यनभ ३ ११ १क्मण्यनं उण्यस्भनण्य १क्ट्रथलं क्रिस्ट्रथलं य लङ्गीकलङ्यक्रभाषुम्यं वण्णीम क्रिव्मन भाभ ॥ विभाभनेड रोधकभन्य किंदु धलेव माक्ष्याण्या गंगीक लड्याक्मा भूत्यं भवन किंड्बमनियमित्राः गडेउचल्यनम्। गमस्म प्रथम्बर्सः यद्भितिः सिंह्हान्यः यन्गण्डि।

धरु भरय • रणवरप्रभूमक्य • अहरीम भरम् यउनम्ब इन्हें जिन्यमें अध्यक्त युव मेव भक्ष प्रश्रेष उंचर्र्युकदि॰ युवण्भेवण्भ॰ परुष्टि रणवड्व थानुष्यडकृते वसुक्राः उस्ति हरू मिरियर् थन्द्रें " इन्स्ड्यूडें र्यास्त्रेपचित्रं भवमेथावड् ध्रुभ्डयः ठणबङ्ग्भुः भक्ष्यङन्मः यंस्रभ्येशि क्रमा अभास द्वार के के कि है ।। उभास हैं विक्रा के वह भड़्यें का वड़ व अम्माय उनम्भागलक्षेणद्भिमाः।माद्रण्याच्ये. इणी देशकणीष्टः एमुं भागान ग्राम्लेश निक् म्बड ।। उ भारता भाषा वडी विन्द्र थ था भर् ॥

११० न्डल

उभामसा • भ्रमावर्गा • यड्र यड • हणवड व्यन्त • भ्रमास - श्रांतभः थथा ।। कल्म भड़ जलया य उद्याप दमका फिट्टः १म - चुक्के थुथं -११ उउ विकस्त अन्तर्भित्र नमार्व्याः भ्रमाधान्त्र ११ ेरियचनग्राण्यान्भः सन्तिलाभुक्षारिकः म् यः अभिन्यं निवक्तयः ४३० अनुस्र रण्यः वसन्त विश्ववि स्प्रियुं शानगानयः निर्मं अस्ति निर्म यः वायद्वानायः इत्वान्यम्यः मुग रलक्नामार्गः भड्डक्नवारः महत्यः मह्यः गम्य • इतुरय • भ्रम्य • भम्य • एइ • ल्ल परि श्वि भूमें मिथा गर्या । वहरू ने या री

क्युक्क्य । उद्गान्य । विश्व भीवति । भिया । न्त्रयन्य यन्य- क्षार्य मार्ग्य-(ग्रमण्याय- राग्याय-विराण्यायः व्यामयः यक्षायम्यः भागवरायः -ममचक्रयः॥ गृडयुण्ययः इउण्युण्य । स्राभेद न्य • क्रियुग्य । ११ १७ इत क्य • १० ९व ले . विश्वतिकः विभिन्ने किरानिने । विद्यमिने विसहलेक्च गर्वक्ष्मस्वाय भार्षायडन ह्मचर्क् नुभः मुख्येन भूष्येन ११ छियहुनुभ मन्भीगिरु च्या यर् प्रमेश्यम् अग्मा च मन् एर्स । राजवर बन्से वार्य यह म बरक् राम वार् कलमान्वडार् देशकः बद्गः प्रथं पिकलायन्भावतः ११

म्यामा रेका भी रहन द्वारीया म्या के भागामा करी उर्देशमुद्द्रश्मिक सिंग सिंग ध्या अविक स्व उत्रः अकु यउनेम गालभी कृत्ममंत्रा दिन पर् उड़ मीध्यारिकार्य • ११ मन्या हिसाला । मन्य इ भारत रायर ग्या अडी स्नेरंग प्राथे कणवडवः भाक्तयः गम्भथडिकलः उरु रकः रकः नम्भाव उभ : 10 कारिकारिशमी कई राज उसे मुक्ट मन १ण्डांक्र मंबराके मयनभः मीये व्यान न त्युम ने क्र जन्म ।। प्रमुभाभनभेरक द्वारिया ।। भाक्षायुउन्म मर्भाष्ट्रभ यस्भाग्ना दिवस्तार

्री:

भनिवियम् । विस्तुसुरु भूभाउम् विराध भेसण्डिभाक् भागमलुग्लठाभावे : भेपूर्भिक विलयलग्डसत्त्रभी ११ गथक कुण्क श्मिग्स मामण भन्भावसभागित भूणभ उचिडः॥ रमस्तिक्वेशभन्भः॥ - मुबर्भः ९ नुष्य १ नुस्रामन् स्यान । मनम् व । १०५० म भेमण्यंत्रभः गण्यभिष्ठक्त । दम् । श भनः मनम १एउट्टम मिलाला ये छिल् क्लमम् छन् यपुं मध्ति गु

भक्तिण्यन्धिक्षेत्रध्यान्य । प्रदुष्य

व मार्डिड हिस्से में हैं हैं हैं विकास महाराय गायक्नभः ३ उद्याप निरुक्त मयः। वद्यक्त मय सुद्वा वकाः भ

डम्डव्युम्प्थान्त्र क्रिक्य्य्य कर् अवाचा महारुम् इरमान्ययभिष्ट्रमः व्यष्ट्रभूमेन्यर्भिष्ट्रमः हणवर्षाः भट्ट यक्निक्षान्। भेरव्याभूतः नुभम्हन यमण्यवस्य एयः भहन स्वह वर्षस्य चिमित्रिवमाउँ मुथमाउँ न सुर्थ भूष्टिए न उउर्वन कर्ने इहार महिन रहेड अर्थ स्मान्तने याभागा । गडेड्न अर्थ स्मान ने महान रहेड्न अर्थ स्मान ने महान रहेड्न

क्यवेउ वन्ध्रमवस्टाम भक्ताया नमवान्था भन्ता आभार : भड़ाकार है: 3 देशकार के के कि नेवः १वसुभमयी भू ४५ यम् कुम्भमा कु. मू १व मैग्ये नर्न महिरे खेमेगरे नर्न न्यान ज्या निधिक्षमत्रकः मेडियेन्ति सिधिर्भन्ति भरीत भस् भ उउ:स्मा भू भ्राप्त अव चुर्ड सरीयउं न सन् क्ट्रिक्ट के क्रिक्ट के क्रिक के क्रिक्ट के क्रिक्ट के क्रिक्ट के क्रिक्ट के क्रिक्ट के क्रिक के क्रिक्ट के क्रिक्ट के क्रिक्ट के क्रिक के के क्रिक के के क्रिक के के क्रिक के के के क्रिक के के क् चुपविभामक्षामसम्वभुगम्ममम् रक्षेत्रं भूम विभागमान भग्णाडमा, वुमेकलमे इम्वित ्रेक्मलः काल कल्पार्यन्तुः॥ नवान्युः अवस्यः भम्भवद्भाष्ट्रमाष्ट्रमा सम्बद्धा न व्या ल संबद्धा

इल्स्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्र द्रनीरद्रम् स्वत्रच उमद्भम् मर्ः भ या लुस् भार्व यक्त विकार भयाः चयः भविभारे यस् क्रानुग्धार्थेड्याचायालिक्याक्रभ्यं क्रियं नीलेंड्र ल मल्डा भेडे द्रारा लाग लाग है राज वस्याहुडम भागीराण्यानिः भीयाउन्समक्रमवः गुरुग्याला र किं उन्मार्थित है कि मिला है कर के जान क्रमरणः भामग्रेत्या। न्जयण्यि म्रिस्स्टिन् य सः अक्रिकेरि भीव नियस

विमन्त्रभुश व्हारण्य धिम्यउन

ल भाउउ हा अहस् नह स्थान निर्ध उस्य इति धारिभ उड्ड चरभया न्उभ इयान्ड किमाभ-मरावणीमाकुड कन् अम्बद्धान्य स्थान

3:

उद्भारतिमान्त्रम (ग्रीम्न भभवद्वर ८३ स्थाम्ड्रा पानिर्म के देव मन युडः यन्त्रम्भमम् यथः यन्त्रः ॥ अध्यास्त्र व्ययनित्रभूभ इन्डा भणवर्षाण नेप्रयुर्भ भक्ताभित्रचेन्लभास्याः स्यय उत्राचिक्ताभद्रभा रश्चरा भवउउयण्यम्यङ्गः। नेभनवह निवसराभाग उन्नियिक्षितिवा भारतिस्या। गर्वे ४५ भग धुरुम्भभिनिद्धः मनुद्रभे दवभैन्यभाषा सुन्द्रभ उभुन्या विरुप्तिया भन्तिभूभिति हुन्स् सार् ११

इंडिय'डी

इने प्या दरणन्यन इड मक्तालभा अध्रहडदायगित सुंभ्य छ। मिनु मैंसवय श्तिकारी।। इ इ उपचरणभु विद्वार्य भु दे रहे वस भ इंग्नेमिड मन्ड्रिड भीष्ठः व्याक्षेविद्रिउभः मेमुगाने विस् मुक्तिश्र भ्रम्युम्भ्रभु दि ११ भइर्रे च्या वेभव वेडी ने मधु च्रम् भिट्टे अवयक्ति करलेग्ये कीर्मा करिक भन्वन्त्रणण्यान्याः जयान्यान्यम्त्रिमाधुन्त्रभद्दाभ

इ भयाष्ट्रभाः वयभागनान्ते,यंभाद्रश्रभाद्रश्

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

इन्मिरिवेड पुँद्राभ्याका विरिवेड उने पूर्वेशम भागमा पुरुद्धिमा द्वा नुनुद्धि, यम्युड य युडिशम् अचेडम्ये कृत्ययद्व नेइ वेड्र यस यस् भिर्मे में विश्वेस य्याला १००१ के १ वर्ग नाउ ग्रह्मान् क्रिक्स में में में नुसु १वड भड्स् वि 5 न्यहरभवधहर भवनक्ष भटनन्त्र य यहा वितर के करं लेयस चीन मधियु भीन भविम मंड कल्यस उउभानेकि हिरी री भने ब्राय मिन प्रिय भने विषय अध्या हे स्वास्त्र भागमा ने अध्या है भाग मान भुउन उन सम्बन्यान्त्रभ्रभन्धभानः श्रु द्यश्रु

मर्ड्वेय विडवर एमं यहाँ भुगया चममति, उभे किन् भूरिक्रयम्स्य द्र्ययह्री मध्राम्य द्राम्य भनभी सुर्वे यक्षेत्र यस्ति । स्यक्ति रेड्सारिश्व उद्गिक्तिकार्या अन्द्रा विस्कृत द्विति संकृता m: भजनद्भाभभद्भेतुः याष्ट्रम् एक्सियाम् निभूम-भीःभराग्रद्धयमा नार्डमिर्ड ३३ सित्से न्यास्टर्ग इनेम्बर ११ भइने न्या । स्ट्रमधेशू स्थाभिष् मिनीडपङ्चिष् महत्त्रचान्त्रभ्भ ११ नमस् द्वालाक ११ ग्युड्ना: ३॥ मुह्डावड/ मुद्दारें मुद्दारव्या द्वा अस्त्रभन्भा भड़ेकिति में उंडि संबुश भविडे विवाद ॥ निवस्त्र व्यान्य र्मान्य र्मान्य रियान्य विभाक्त । मुच्य ४ जुर्गबङ्गिरुभञ्च. ग्रिवड्नुम्भी ॥++ CC-0. In Public Domain. Digitized by eclargotti

四面。

न्यार्ग्वध्यभाग्रमन्य प्रयंव इ द्वात्रम्भ द्वान्यः समालवर्ष पंत्रेन्नः अपनार्मेन प्रोन प्रोन मीपन क्रिने राष्ट्रभाष्ट्रवारंभद्धम्य क्रमन्य वर्षाः भन्नः धिरात्से ।। मुचनाः १ नुरा १ महामन् मृद्यम् भ रय भिन्नि नर्में ने मंत्री अग्रद्ध मुख ने में मन्त्रभः नुमासनीयन्।। अनःमनेमः स्यादः मिलायः गण्डमः गुण्यहुरुभः ३ अचवडी - मुग्रेहिवस् राष्ट्राण्युरान्त्रभिन उडः अन्हम्स्याः। चुम्रावडभ संभागित्वभनेवभन् ३। विकाभितिमानुउभी॥ रम्बर्गिकार्थाम १। स्वन्निकिस्टियः ११ स्वन्न गराव अविमें गरु विद्वा गरु भिरा भवभभाउँ उमें में वयर भी दे

रक्षमा र के कि का ११ भने द द कि कि व मा ११ भने ह से उः । भारत्य विकास निक्षा । भारता । भा इन्पडिन अन्युक्तिस्यां भर्षेत्रम् मन्युक्तिस्य स्थाप्ति । ११ कि इने अन्युक्तिस्य अन्युक्तिस्य अन्युक्तिस्य अन्य धनसुर्वमङ्ग्राभाभव्यः धन्य द् नीबयर् : : 2465नडड वचयाभभरः अवयराभ न्स् कुला : ११ भवा :कुले वर्षे के वर्षे किया उन्निमंत्रक वण्य वस्ति भूभवृत्रणाय भाभवाद्यभाद्यवाद्याः ११ एसउतिथ् ॥ भण्यस्के उन्य भण्य स्यो गम् , अन्न-मञ्च यशिवधः

वीर में ने दह का भेड़े वरी हार भेड़े नुभा रवणी भड़े 10 इयुध्राम्मा क्षा क्षा असे इयुध्य यम् व क्षा य व न्द्रसुष्ट्रम्भा ॥ ॥ वड्डाभ्डन्द्रिवसुर्गा । वन्या। भनः भित्रभाष है । पद्में ३ भनिश्य में ११ मड्से स्थार भारिभीद्र ११ भूम्सुरामिड मा उउ:भारेस्ड निया का महा।। गरं मुख्यभुन्द भूष्ट्भारयभुन्द ४६ भारो।। महत्यमुन्द भ्राव्यमुन्द वृद्धि मङ्ग्रह्मार्थाः। क्वं विश्वसं सम्बं न्यं न्यं निर्देश महत्त्व मूर् भारति क् य.म.म.म. ११ भड़हा म.म. म. म. म. भा नाम प्र

अइस्-विन् में निंगानिक्ति के निंगिन्य भी के निं · भि॰ भेगा १८ के सि. से॰ भेग भेग में भि से अ अ भेगी। य ।। इयस्य न र ना निया ।। भारति न र र न र न न्त्रभावश्राया कामत्वाद्यम् न्यायश्राद्रा भ्रत्यम भारत्मा अं अधिविश्व ३ नया भि॥ दिश्विभी उन्जिनिस्या था स्टेरी ।। उन्द्रियं पिन्स्येडि३ प न्याने मार् देखें है गें कार्यमेशायुक् में इसे देकार के खीं मयान्वग्रेमन्भित्रयान्त्रम् ५०११ सम्हिति विकिति द्वन प्राप्त वाः नावाः नुद्रणमिक्षाः व नुद्रदेश ्रमड, भर्म क्षण्याम् भः महत्रका अम्युषः

भाजनात्रं नात्रं महत्या १ उड्डाम्ला र्मार्टी भूनय ४ हणात ११ ४ विभवत्व इतिथाः समाभुः ११ %॥ ນແກສແສນສາເສ ກະ ນຸສຸນສາເສນສາເສນ

विम्हाम्य विश्वाः १३ इर्म इद्राक्लम उन्न काल द्विन वि स्मिनुनि निर्देशित्राच्यान् । इस्की निर्मायभी इर्फे क्लम हर्ष पश्चमं कियी न में कि ने कि विश्व कि भु उत्वर् ११ भूणनानिश स्ययं वायवं भदाय इदाले । भूरक्षड्य - क्रिक्षिट दम् । - मुग्रिमा उदि भस्व द्धिम व्याचित्रम्व, यसभवीव्यासभी नेभः १०१ पूर्ण्येड नहिन् इण्डा विमा १९५० विश्व इन्स्यु देग्ड, उपिष्ट्रिडी श्रुमयः नमः। ०। मुच्ये पत्रभूभि न्त्रभावज्ञभावीदभा मण्यू शिभिया यथभी नभ :। ३। इत्रश्तु

新

लाम्डभद्वग्राइथजा व्वाभामवयानः, इयाग्रभ्यं वयभग इनियास्वः भम्भार्यभम्भवन्यः। ३॥ न्या न्य न्य भ्यम् ग य खन्मा विश्व क्रिक्स वर्ष मुग्निवस्तु नी, युर्व स्नि हैं ह उग्लमल द्विष्ट्र उन्म प्रिकेश्वणमन्भ ।॥= ११० म सक्ष्य यान्ति॥ एइन्थडी श्रूष्ट्रभागाम्बद्धान्ति। क्षेत्रभी किकास्त्र) बस्रिक्स मिल्क क्षेत्रभी श्चिमः 10 11 यहसी प्रमास स माडम मार्थान विक्ति , भद्म कामगी के मुंद्रिक के भावडक के यस्तु नमः। १। मरण्याकार्यभार द्वारम् ४ नः भार वर्डियमा। रणकास्किभ्रयमा असीमं हो गूरिकेम महिल हडेच्य उस ११३ ११रे ४इ इन्ड्रेक् भूपप्रादि ११ रेश्वयं भूकि सवउ यन्भः ११

भुःधारमभमः पर्परयन्त्रयण्य ब्रम्सवायन्भः उ॥ येर्ने मुझं क्वायम्बायनभः ५ ११ गणनाङ्ग अनियक यन्भः ५ ॥ शम्हम्बि नेः द्वादिभः भदायनभः ५ ॥ व्यत्र मरा नुसण्यनभः ५ ११ यऽ उन्हर् नुरु नियक्ष हेन्स विवय्या।। गर्याद्वा : 3 महण्याद्वा : 3 म न्इस्पिडन वर्य दिन क्राक्ट्रनंभः वन्नकामः ज्यान वर्षे भावराणाः दिरत्याहा इ एम: चत्रवयु गा एकिकतमन्त्रपन्।। उउ खरणभावभावीय ११ न्यस्त्री जुमावमेगवभ इसुर्गिर्भ क्राणन्त्री॥ सन्दर्भावनाराभागात्री। इतिश्रामा भव्दांम - न्यमदा - भूण्यमं ११ द्रामें मुगून

No.

भेडरिक्स रिक्र भर भागवाक कवित्रभाव का मस चरम विरिक्ष मुद्रम् वार्णे इ दालमा के, क्षा भगम भाग त्रवर्गाः वर्भः अविङ्भाभ माउग्वंब् भवं अविङ्भाभः भारमे हार भारति ति में के निकार कार्य में में भार इन्क वर्षे ॥ उद्यावर्षणाले ॥ उउ छिन्न के च मिलिया अवस्ति मेन्न भारति । येभिक क्षेत्रकार्यक्षेत्रकाराज्यकार्थित्र महिल्ला ११ ११ भवभाषान् अमधेड्रभाय भाष्क्र इण्ड्राक्ण्यावसुद्भावना ब्राया में देवें कर का का महिमा है भाग निक्न के निम मुद्धा व भूमा व देश मुल ले प्राप्तिक कर्देश इड मी पर्म सुर्थ कर्मे भड़ा भी भी भी भी में के हैं। असी म भने दि

द्रामीग्रंथित इडामा उउ प्रमा वनमारिव महिल गक्किय्व (राभारत मुक्ने भर्मे म्यू प्रेण्ड उप्मी। उड: श्रद्धाः नमेग्रानिय न्यानमः श्रव्डभा म्बल विशः इडिल्मवय्य हार्यन्मेन्सः यङ्गि भारान्। भडान्व इरागिन्यङ्ग्रहरून्म, न र्याडयङ्गिन्न नि दिउँ इंशिम् भिम्म में भूष्ण भूष्ण । उद्ग नवण्यक्यः, ए रमक् प्रभाभमक्ता भेडे किर्भ विभेनभः समिनभः ११ न्या उपका भद्रणा स्थाउत् अभाग्या भूय भाग्यहालक्का विस्कृत्य करण्या वडाहः भूकगउय,इझ्ल,क्लमम वडकः॥ द्वान्य वस्तु भन्तु

अं र

\$5.00 \$7.00 मर्डिः मड्डम्बुर्य भाषाग्य पड्ड पड्ड राग्यल य म्हन्य हु भूक्य विश्व सम्प्राप्त मध्य स्ट्रिश्च हु भिक्टः भिद्द ग्लाम्बङ्कः अस्यय प्रम्य स्ट्र्य हु म्ला अस्पर्य हु भाषा स्याप स्वय प्रमुख्ड स्ट्र्य हु भूम्पर्य हु ११ स्याप सम्य स्याप प्रमुख्य प्रमुख्य स्ट्रय यहं अर्य स्थाप सिन् हु । स्याप स्कृत्य स्थाप स्थाप स्वय स्थाप स्याप स्थाप स

न्भः १५५ृष्टः ५५ इनिभण्यायात्रः व्रानभयभण्यत्रम् यक्ष्णुम् ५५ सन्भः भण्य प्राप्त स्वाप्त भड़ा के स्वाप्त के स्वाप्त स्वाप

वरणनी वर्धनिवर्धनी 'न्याने निवर्धनी भिर्देशमार्थ उन्ने ११ ख्य :, क्ये:, अट्स, युद्धाः, अरूभ उह जिस मीला गान्याः भाष्ट्रभितः । स्टब्डः भेन्यः सुन् नुयः भवभाग्यः स्यानुत्रम् द्वारा भाषा । न्य्यग्रह्मकृषवङ्यः शायम्भुमीवन्मीनं सिस्थात्र्यः नम्बङ्गं॥भद्गाय्यः३॥दम्क्रमोनं वमक्रम्ना वस्तरानः १५३: १४५ सम्बर्धि स्पारमध्ये १५३: भार : भावरं हमा का के अंच रात्रे । वर्षे ने होता थम् ५ कलम् भरान लाउम् ५ न्या भर्काम् १७३७ मुग

िलमस्ययकिर्विकेद्गा श्वमन्भद्रणाभ्यडिक्डिम्यश्रु भन्नभःश्र भद्राण्याच्य जभाग्याद्वामयुभा चः भूत् याम वर्षेत्रकायण रहें अद्रानीलया हैं ज्ञान निया भाव अही नानी विश्वक्षण मुन्द्रवराः भूर्णभारित्वराः कलममपुरः इ कि विश्वनित्ववस वराः महत्तमम् भा नुमन् निन्द्रभक्त वहला यर् पर्ध न प्राध्य प्रकार रमङ्ग्लाहराः नियं प्रयो सद इहाल, प्रक्षार जिया की नी । मुख्ये भुष्युभिति भूरूप रिड । मुख्य मुग्रम न्या भर्भन् न्या उत्र भड़ न्या विषय = । नियम भ्रक्तिवडा।। वास्त्रिक्तानी श्वर्थुश्राञ्च यडनम वरः।

ध्यपितंत्रक यांगे ।

भड़ण्यस्थि । इक्क भीन वडक भीना , क्या मवड सु वरद्विश्वार्थ गुंड च्रवण्ड्याः यवण्डक्रिं।। भण्डा भूमक्निमः॥ नेषम नेम नी निक्षय मुध्वन दुर्भाउय मयुगिर भ्रात्रः ११ लण्यम् अञ्चलम् विनेधिष भारित्राम्, महाक्रायान्य वाक्रीय भाक्रात्व ठणवर्रा १ ॥ भर्षा भन्य जनगण्यर्गम् थण्डेन्यः भक्तमर्थनिवण्यस्ति भनः सर्वेमचीरः न्त्रभः मीर इम्पुर्भाष्णी उसम्पिड क्षुन्तः , यव भित्र उक्रमें भड़्म सुद्धार्भ सु उन उत्तर मह

अटें के प्रमान दे ते कुर्य ने में में में में में में भग्भारि, लिक्काविष्कानी मुख्यावहः भूरेपार, श्री क्लमस्वडः :, इ द्वाविश्वमद्वरस्वडः ; मरुचस्युर्भाः नुमार, पर्वारेन्यायला, मेले इसक, बम्लायाद्वाभूम्था, म्य्यमुद्रम्मयः धिरुग्णमवरः ,, म्य वर्षे भद्र धर भूरिभर, जुभारय: ॥ ज्यभूरम्भर, भूष्मरेड्॥ न्य सम्मार्थियमान्यः स्य उतुभागं, स्य भित्रं हा। उग्रध्नक मवड ११ वण्युम् वर्म येथवध्रभाक्षण्यं उन्मव इ: अरण्याई ३। इस्कास्य प्रकास असव ग्रेन्भ : ११ भड़काल धड़यें क्रमंग यहली ह अभ

が。 第一

